हिन्दी विभाग

पंडित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय
छत्तीसगढ़ बिलासपुर (छ.ग.)

परियोजना प्रतिवेदन

अकादमिक सत्र् 2020-21

पोस्ट गेजुएर्ट डिप्लोमा इन ब्रॉडकास्ट जर्नालिजम एंड न्यू मीडिया

विषय :– कोरोना महामारी (covid 19) के खिलाफ सोशल मीडिया का प्रभाव

निर्देशक

डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति
(सहायक प्राध्यापक)
पं.सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय
बिलासपुर छत्तीसगढ़

प्रस्तुतकर्ता

उमा शंकर सिंह
रोल नं. - 214215
नामांकन क्र.-KS214215
PGDBJNM
मों0 9669728957

अनुक्रमणिका

घोषणा पत्र

प्रमाण पत्र

आभार

अध्याय एक :– शोध पद्धति

भूमिका / प्रस्तावना	01	–	03
सोशल मीडिया व जन जागरूकता	03	–	05
कोरोना और सोशल मीडिया	06	–	08
सोशल मीडिया प्लेटफार्म एवं स्वास्थ क्षेत्र	09	–	10
आज का सोशल मीडिया	11	–	12
जीवन में सोशल मीडिया का प्रभाव	13	–	14
सोशल मीडिया का दुष्प्रभाव	15	–	15
कोरोना वायरस से बचाव के उपकरण	16	–	16

अध्याय दो :– अध्ययन मॉडल 17 – 18

अध्यापन मॉडल का आरेख	19	–	19
उपरोक्त मॉडल की परिकल्पना	20	–	20
तरीका माप आईटम व निष्कर्ष व ऑकडा संकलन	21	–	24

अध्याय तीन :– कोरोना वायरस का इतिहास

कोरोना की शुरूआत एवं सोशल मीडिया	25	–	25
विश्व में सोशल मीडिया	26	–	26
भारत में सोशल मीडिया	27	–	27
छत्तीसगढ़ में सोशल मीडिया	28	–	28
भारत में कोरोना वायरस के रोकथाम	29	–	29
कोरोना वायरस के लक्ष्ण	30	–	30

अध्याय चार :– कोरोनाकाल में सोशल मीडिया

COVID - 19 के समय सोशल
मीडिया ने हमें क्या बताया 31 – 35
कोरोना पर प्रसंग 36 – 36
प्रभावित क्षेत्र 37 – 37
कोरोना प्रभावित के संकेत और लक्षण 38 – 39
मूल प्रजनन संख्या 40 – 40

अध्याय पॉच :– भारत में कोरोना व सोशल मीडिया

भारत में कोरोना के खिलाफ सोशल मीडिया 41 – 41
भारत में कोराना से सामाजिक स्थिति 42 – 42
भारत में कोराना से सामाजिक की आर्थिक स्थिति 43 – 43
भारत में कोराना से चुनौतियॉ 44 – 44
भारत में कोराना से प्राकृतिक पर प्रभाव 45 – 45

अध्याय छः :– प्रस्तुतीकरण एवं विश्लेषण
निष्कर्ष 47 – 47
सुक्षाव 47 – 47

घोषणा पत्र

मै उमा शंकर सिंह नमांकन क्रं0 KS214215 यह घोषण करता हूँ। कि कोरोना महामारी (COVID 19) के खिलाफ सोशल मीडिया का प्रभाव विषय पर प्रस्तुत यह परियोजना कार्य मेरे द्वारा संग्रहित तथ्यों पर आधारीत है। तथा यह मेरा मौलिक कार्य है। यह परियोजना कर्ा मैने डॉ. जयपाल सिंह प्रजापती (सहायक प्रध्यापक) पं. सुन्दर लाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, छ0ग0 के मार्गदशन एवं मेरे स्वयं के प्रयास से मिथ्या वर्णन से पृथक रह कर पूर्ण किया गया है।

स्थान :– अम्बिकापुर

दिनांक :15/07/2021

भवदीय

उमा शंकर सिंह

रोल नं0 214215

नामांकन क्रं0 KS214215

PGDBJNM

अस्पताल में बेड और दवा सिलेण्डर का अरेंज करने में मदद सामाजिक संस्था और एनजीओ द्वारा पैसे डोनेट करना दवा उपलब्ध करना. व सोसल मीडिया के माध्यम से ठगी से बचाने के उपाये बताना।

सोाल मीडिया विसवनीय जानकारी के लिए एक माध्यम भी हो सकता है। जो अवसर तथ्य जॉचकर्ताओं या चिकित्सा पेसेवरों द्वारा निर्मित होता है। महाराष्ट्र राज्य के नागपुर स्थित. क्रीटिकल केयर सलाहाकार डॉ0 हर्षवर्धन बोरा का मानना है कि उनके महानगरीय रोगियों और संपर्कों के बीच सोसल मीडिया ने अंततः भारत की दूसरी लहर के दौरान गलत सूचनाओं कि तुलना में अधिक तथ्यों और सच्ची घटनाओं कों फैलाया है। लेकिन उन्होने यह भी देखा कि वायरस फेसबुक पोस्ट और टेक्स्टचेक बुक द्वारा covid-19 उपचार के रूप में हर्बन उपचारों से कई रोगियों हल्दी. सरसों का तेल. काली मिर्च. नीम के पत्ते. करी पत्ता. रसोई के कई मसाले को प्रतिकूल प्रभाव पडता है। भारत में प्रतिरक्षा बढाने के उददेष्यों के लिए हर घर की अपनी हर्बल काढे कि तैयारी होती है। उनमें अलग–अनग चीजे हो सकती है। और बगीचे से जडी बूटियों का इस्तेमाल कर रहे है। सोसल मीडिया प्लेटफॉर्म के उपयोग का कोरोना के खिलाफ एक महामारी के रूप में सार्वजनिक स्वास्थ्य सुरक्षा पर महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव पडा है। सार्वजनिक स्वास्थ्य जागरूकता और सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवहार परिवर्तनों ने इस संबंध में आंसिक मध्यस्थो के रूप में कार्य किया इस लिए किसी भी स्वास्थ्य संवर्धक रणनीति योजना को विकसित करते समय महयस्थो के रूप में सार्वजनिक स्वास्थ्य जागरूकता और व्यवहारिक परिवर्तनों

को ध्यान में रखते हुए कोरोना के खिलाफ सार्वजनिक स्वास्थ्य सुरक्षा पर सोसल मीडिया के हस्तक्षेप प्रभावों कि बेहतर समझ सहायक होती है। सार्वजनिक सोसल मीडिया चाहे वह फोन मोबाईल. टेलीविजन लैपटॉप. कम्प्यूटर रेडियों एफ एम व अन्य गैजेट मापव कि लक्षित आबादी को संक्षिप्त संदेसों के प्रसार के माध्यम से सार्वजनिक सुरक्षा जागरूकता मदद बढाने के लिए एक प्रभावी उपकरण साबित हुआ हैं। सोसल मीडिया के हस्तक्षेप के प्रभावों की बेहतर समझ सहायक होती है। जन जागरूकता बढाने के लिए यह प्लेटफॉर्म प्रभावी उपकरण है जो बीमारी कि वर्तमान स्थिति के बारे में जानकारी के वास्तविक समय के प्रसार में योगदान देता है और जनता को सकमित होने से बचने के बारे में उचित सलाह देता है जैसे कि उचित दूरी बनाकर रखना. मास्क लगाना. हाथों को बार–बार साबुन से धोना. सैनेटाइजर का उपयोग करना ज्यादा जरूरी हो तभी घर से बाहर जाना. कोरोना का टीका लगवाना व सकारात्मक सोच रखना. अफवाहों पर ध्यान न देना गलत प्रचार नही करना. नियमों का पालन करना. सभी का ध्यान रखना. संक्रमित होने पर भर्ती अस्पताल में होकर निर्धारित खुराक ले व लोगों से दूरी दृ परिवार के सदस्यों से दो गज कि दूरी बनाकर नियमों का पालन करे और चिकित्सकों व स्टाफ का सहयोग करें। सोसल मीडिया और स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों कि स्पष्ट कमजोरी के आलोक में संक्रामक रोगों के बारे में जन जागरूकता से जनता के व्यवहार में परिवर्तन होता है जिसमें आसिंक उपचार का प्रतिनिधित्व होता है। विसेस रूप से यह जागरूकता चिकित्सा सुविधाओं पर दबाव व आर्थिक बोझ को कम करता है। जन जनगरूकता बढाने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफार्म को प्रभावी उपकरण

माना जाता है जो बीमारी की वर्तमान स्थिति के बारे जानकारी के वास्तविक समय प्रसार में योगदान देता है। और जनता को संक्रमित होने से बचने के बारे में उचित सलाह देता है। बसके अलावा सोसल मीडिया प्लेटफार्म लाभकारी जलवायु और सामाजिक आर्थिक डेटा प्रदान करते है इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया प्लेटफार्म को संचार के एक आवश्यक स्त्रोत का प्रतिनिधित्व करने के लिए दिखाया गया है जो इंटरनेट के माध्यम से लोगों को सूचना के निर्माण और प्रयार को सूक्ष्म बनाता है। यहॉ पर उल्लेखनीय यह है कि सोशल मीडिया प्लेटफार्म समुहों और व्यक्तियों को सभी विषयों और मुददों के बारें में जानकारी आदान–प्रदान करने की अनुमती देता है। जिसमें अल्पसंख्यक समूहों के सदस्य या ऐसे लोंग शामिल है जिनके पास अन्य सूचना स्त्रोतों का उपयोग करके अपनी राय व्यक्त करने का कोई अवसर नही है उन्हे भी स्वतंत्रता प्रदान करता है। कोरोना महामारी के इस दौर में सोशल मीडिया एक अहम भूमिका निभा रहा है। इस पर कि गई अपीलों पर न सिर्फ अधिकारी संज्ञान ले रहे है बल्कि कार्यवाही भी हो रही है जिससे लोगों को मदद मिल रही है। ऐसा ही मामला न्यूज पर प्रसारित हो रहा था कि यूपी स्टेट में जिनमें टविटर पर कि गई शिकायत के आधार पर पुलिस ने कार्यवाही की है। जिसमें एक लडका अपनी पत्नि कि जान बचाने के लिए ऑक्सीजन कि सख्त जरूरत थी और सुबह से शाम तक लाइन में लगने के बावजूद उसे आक्सीजन नही मिला उसने इसकी गुहार टविटर पर माननीय मुख्यमंत्री महोदय से बडे अधिकारियों तक लगाई फिर पुलिस के एक बडे अधिकारी द्वारा मामले का संज्ञान लेकर युवक को ऑक्सीजन उपलब्ध कराया गया। अन्य दूसरे मामले में रेमडेसिविर दवा कि

कालाबाजारी करते उसे उॅचे दामों में बेचने कि शिकायत टविटर पर ट्विट की गई और शिकयत के आधार पर पुलिस ने उसे गिरफतार किया है। और कानूनी कार्यवाही में उसे जेल कि हवा खानी पडी है जो की सोशल मीडिया का पावर कहा जा सकता है। कोरोना महामारी कि वजह से देश की हालत इतनी खराब है कि सोशल मीडिया पर मदद वाले पोस्ट तो कहीं हृदय विदारक पोस्ट से भरी पड़ी है। शायद ही कोई सोशल मीडिया अकाउंट होगा जिससे किसी की मदद के लिये कोई पोस्ट नहीं किया होगा। कोई व्हाट्सएप पर तो कोई फेसबूक के जरिये तो कोई ट्विटर पर ऑक्सीजन सिलेंडर, रेमिडिसेवर, केविक्लू, बेड़ आदि के लिये मदद मांग रहा है। सिधे शब्दों में कहें तो भारत में करोना के खिलाफ जंग सोशल मीडिया के जरिये लड़ी जा रही है। सोशल मीडिया का इस्तेमाल शायद ही पहले कभी हुआ होगा। एक ट्विट से लोगों को मिल रही है दवाईयां और अस्पताल में बेड़ की जानकारी, भारत कि पूरी आबादी तो सोशल मीडिया का इस्तेमाल नहीं करती, लेकिन लाखों यूजर्स ऐसे हैं जो आम लोगों की आवाज बन रहे हैं। और उनकी मदद के लिये आगे आ रहे हैं। जिम्मेदार लोगों को टैग कर उन तक बात पहूंचा रहे हैं। सोशल मीडिया के जरिये लोग एक दूसरे का मदद कर सराहनीय कार्य कर रहें हैं। सोशल मीडिया एक ऐसा प्लेटफार्म बन कर उभरा है जो की आम आदमी से लेकर बड़े व्यक्ति तक सामान रूप से मदद के लिये सेतु का काम किया है। इसमें जानकारी का होना, इस्तेमाल करना एक महत्वपूंर्ण कड़ी होती है जो की अपने आप में यह बहुत बड़े स्थान रखता है।

स्वास्थ्य ज्ञान,व्यवहार और परिणामों पर सोशल मीडिया के प्रभाव के साक्ष्य से पता चलता है कि ये उपकरण व्यक्तिगत और स्वास्थ्य आवश्यकताओं को पुरा करने में प्रभावी होता है। लक्षित जनसंख्या सैद्वांतिक नीव, वितरण के तरीके, कार्यक्षमता और उपयोगिता में व्यापक रूप से भिन्न होते है। यह व्यापक विविधता यह पता लगाना मुश्किल बनाती है कि क्या काम करता है और कैसे, और दृष्टिकोणों कि तुलना करने के प्रयासों को जटिल बनाता है। सोशन मीडिया प्लेटफार्म के उपयोग से कोरोना को महामारी बीमारी के रूप में सार्वजनिक स्वास्थ्य जागरूकता बढी है, सोशल मीडिया प्लेटफार्म के उपयोग से महामारी कि बीमारी के रूप में कोरोना के प्रति सार्वजनिक व्यवहार में बदलाव आता है। सोशल मीडिया प्लेटफार्म के उपयोग से महामारी कि बीमारी के रूप में कोरोना के खिलाफ सार्वजनिक सुरक्षा में वृद्वि होती है। सार्वजनिक स्वास्थ्य जागरूकता और व्यवहार परिवर्तन सोशल मीडिया प्लेटफार्म के उपयोग और कोरोना के खिलाफ एक महामारी रोग के रूप में सार्वजनिक स्वास्थ्य सुरक्षा के बीच संबंधों को बढाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सार्वजनिक क्षेत्र अन्य क्षेत्रों की तरह, सरकारी स्वास्थ्य विभाग और राष्टिय एजेंसियां निवासियों के स्वास्थ्य निगरानी, सुरक्षा और सुधार के लिए जिम्मेदार है, और राज्य द्वारा वित पोषित देखभाल वितरण संस्थान इलेक्टानिक सरकार में भाग लेने के लिए बढते दबाव में है। कई ऐजेंसिया असे हासिल करने के लिए व्यक्तिगत रूप से सोशन मीडिया प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल करेंगी। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के साथ व्यापक सार्वजनिक जुडाव स्वास्थ्य देखभाल क्षेत्र में उनके आवेदन के लिए एक प्रभारी तैयार मार्ग बनाता है।

करोना वायरस के लक्षण कोई अलग नहीं बलकी कॉमन वायरल इन्फेक्शन के लक्षण जैसे ही हैं। बूखार, गले में खराश, खासी, जुकाम सांस लेने में परेशानी इन लक्षणों का अर्थ करोना संक्रमण नहीं है। इन लक्षणों को महामारी के साथ जोड़ना महत्वपूॅर्ण है। करोना वायरस पूरी दुनिया में लोगो को पूरी तरह से प्रभावित किया है। इससे पहले भी इनसान के सामने वायरस का खतरा पहले भी था, महामारीयॉ पहले भी फैलीं थीं। लेकिन दुनियां को हर नये संक्रमण या फ्लू से निपने के लिये इस तरह रूकना नहीं पड़ा था। करोना वायरस हमारे जीवन के लिये खतरनाक है ये हमारे फेफड़े एवं श्रवसन तंत्र में बडे पैमाने में मौजूद रहता है लेकिन हमारे हमारे (इम्यून सिस्टम) को लगता है कि सब कुछ ठीक है। यूनिवर्सिटी ऑफ कैम्ब्रिज में प्रफेसर पॉल लेहनर कहते है ये गजब का वायरस है ये आप के नाक में वायरस कि दुकान बना लेता है। और आप को लगता रहता है कि आप ठीक हैं। हमारे शरीर की कोशिकाएं इन्टरफर्णो नाम की केमिकल रिलीज करती है। जब इन केमिकल्स पर कोई वायरस कब्जा करता है तब हमारे शरीर और प्रतिरक्षा तंत्र को वायरस की मौजूदगी की चेतावनी मिलने लगती है। जब हमारे शरीर में मौजूद "लोड पीक" पर पहुच जाता है तब हम बिमार पड़ते हैं। और लक्षण दिखने लगते हैं। ऐसे मे लक्षण न दिखने के बावजूद भी वायरस शरीर में मौजूद होता है और एक से दुसरे व्यक्ति में फैल सकता है। जो कि वायरस फेफडों को प्रभवित करते हुये पूरे शरीर में फैल जाता है।

सोशल मीडिया प्लेटफार्म संचार का एक शक्तिशाली साधन का निर्माण करते हैं जिसका उपयोग संक्रामक रोग विशेष रूप से नये लोगो के बारे में जागरूकता बडाने के लिये किया जाता है प्रकोप के तरिके और प्रसार के विकास में सहयोग प्रदान करता है। जनता के सदस्य उभरते संक्रमक रोगो के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिये पारंम्परीक एवं सोशल मीडिया दोनो की ओर रखतें है। जो लोगों के लिये जोखिम का प्रतिनिधित्व करतें हैं। इन जोखिमों के बारे में सर्वजनिक धारणायें इस बात पर निर्भर करती है कि सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर सूचना कैसे प्रसारित की जाती है। यह बदले में लोगों के व्यवहार के साथ साथ उनके द्वारा लिये गये निर्णयों को प्रभावित करता है। सोशल मीडिया प्लेटफार्म के माध्यम से सूचना का प्रसार के अलावा इन प्लेटफार्मो के उपयोगकर्ता अपनी राय दे कर और स्वयं के अनुभव प्रस्तुत कर के चर्चा और बातचीत में भाग लेतें है। हालाकि सोशल मीडिया प्लेटफार्म के जरिये प्रसारित जानकारी में अक्सर विश्वसनियता की कमी होती है क्यो कि यह अक्सर चिकित्सा विशेषज्ञों या पेशेवर स्वास्थय देखभाल संस्थाओं के बजाये उपयोगकर्ताओं द्वारा स्वयं उत्पन्न की जाती है इस लिये इस जानकारी में विश्वसनियता, सटीकता, शुद्धता या उपयोगीता की कमी हो सकती है। नतीजतन WHO ने स्वस्थय संबंधीत मुददों पर सूचना प्रसारीत करने के लिये सोशल मीडिया प्लेटफार्म के सक्रिय और प्रभावी उपयोग का आहवाहन किया है। करोना महामारी (Covid 19) के खिलाफ सोशल मीडिया प्लेटफार्म का अहम महत्वपूर्ण रोल निभाता चला आ रहा है।

सोशल मीडिया प्लेटफार्म ने स्वस्थय के क्षेत्र में शोधकर्ताओं और चिकित्सकों कि रूचि और ध्यान आकर्षित किया है। जो विभिन्न उद्देश्यों के लिये उनका उपयोग करतें है। इनमें पेशेवर प्रशिक्षक एवं चिकित्सकों का विकास शामिल है। स्वस्थय नेटवर्क और सहायता समूहों का गठन स्वस्थय संस्थाओं के लिये धन का प्रावधान स्वस्थय पेशेवर के बीच सहयोग एवं समन्वय कि सुविधा संक्रामक रोगी कि निगरानी भले ही सोशल मीडिया प्लेटफार्म सर्वजनिक स्वस्थय क्षेत्र में पेशेवरों को कई मुल्यवान अवसर एवं लाभ प्रदान करते हैं। लेकिन पेशेवरों द्वारा सोशल मीडिया प्लेटफार्म का उपयोग कई चुनौतियों से जुड़ा है, जिसमें से सब से जरूरी संक्रामक रोग का पता लगाना है, अपात स्थिती की निगरानी करना, बिमारी के रूझान की भविष्यवाणी करना, और जनता कि जागरूकता एवं प्रतिक्रियाओं को मापना। हांलाकी कई अध्यनों ने सार्वजनिक स्वस्थय संचार के लिये सोशल मीडिया प्लेटफार्म के संभवित अनुपयोगों की समिक्षा और अन्वेशण किया है। सोशल मीडिया अभियानों और स्वस्थ व्यवहार किये गये अध्यनों से पता चला है कि सोशल मीडिया अभियान साकारात्मक व्यवहार परिवर्तन ला सकतें है। और यहॉ तक कि व्यक्तियों में नोारात्मक व्यवहार को भी रोक सकतें है महामारी (Covid 19) के प्रसार को कम करने सोशल मीडिया प्लेटफार्म का उपयोग किया जा सकता है, जिसमे आम जनता के मन में भय और चिंता के स्तर को कम किया जा सकता है। जो कि इस महामारी के खिलाफ सोशल मीडिया का प्रभाव जबरदस्त देखने को मिलता है।

सोशल मीडिया हांलाकी कुछ प्रासंगिक अध्यनों में स्वस्थय संचार में सोशल मीडिया प्लेटफार्म का अपयोग करने के लाभ कि पहचान की गई थी, लेकिन हमने उन अध्यनों कि कमी देखी जिसे स्वस्थय संचार प्रथाओं को छोटे और लंबे समय मे आकार देने और संसोधित करने में सोशल मीडिया प्लेटफार्म की प्रभावशीलता के आंकलन पर चरर्चा की गई थी। साहित्य समिक्षा में गति, सटिकता और लागत प्रदर्शन में सोशल मीडिया प्लेटफार्म की प्रभावशिलता का खुलासा किया इस लिये उन्होने मौजूदा रोग निगरानी का समर्थन करने के लिये सोशल मीडिया कार्यक्रमों के उपयोग कि सिफारिश की। इसके अलावा कुछ अध्यनों ने सोशल मीडिया स्वस्थय अभियानों से सिखे गये सबक की पहचान करने के अलावा स्वस्थय सुरक्षा को बडवा देने और सार्वजनिक संदेश की प्रासंगिकता बडाने में सोशल मीडिया प्लेटफार्म के भुमिका पर ध्यान केन्द्रित किया। इनमें कौलिन्सक एट अल द्वारा की गई एक जांच भी। जिसने इन्कलुऐन्जा के प्रसार को नियन्त्रित करने और जन संख्या पर सर्वजनिक स्वस्थय पर संक्रमण के प्रभाव को कम करने के महत्व को ईगति दिया है। महामारी या महामारी से संबधित सोशल मीडिया अभियान आम जनता तक जानकारी पहुचाने में फायदेमंद हो सकतें है। जिसमें सकारात्मक दृष्टिकोंण और व्यवहार उत्पन्न हो सकतें हैं। जो बिमारी के प्रसार को धीमा कर सकतें हैं, जैसे के हॉथ धोना और समाजिक दूरी बनाना, बिना वजह घर से निकलना, मास्क लगाना, सेनेटाईजर का उपयोग करना, करोना का टीका लगवाना।

आज के समय में सोशल मीडिया दुनिया के कोने–कोने से लोगो को आपस में जोड़ने का अहम साधन बनकर उभरा है। इस के अलावा सोशल मीडिया प्रमुख प्रभावशाली लोगो को अपना ब्राड बढ़ाने में मदद करता है। वहीं महत्वपूर्ण समाचार और घटनाओं की सबसे तेजी से सोशल मीडिया पर शेयर किया जा रहा है। आज के समय में सोशल मीडिया एक गेम चेंजर बन गया है। सोशल मीडिया एक ऐसा मीडिया है, जो बांकि सारे मीडिया (प्रिंट इलेक्ट्रानिक और समानान्तर मीडिया) से अलग है। सोशल मीडिया इंटरनेट के माध्यम से एक वर्चुअल वर्ल्ड बनता है। जिसे उपयोग करने वाला व्यक्ति सोशल मीडिया के किसी प्लेटफार्म जैसे की फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम आदि का उपयोग कर पहुंच बना सकता है।

आज के दौर में सोशल मीडिया जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन चुका है। जिस के बहुत सारे फीचर है, जैसे कि सूचनाएँ प्रदान करना, मनोरंजन करना और शिक्षित करना मुख्य रूप से शामिल है।

सोशल मीडिया एक अपरंपरागत मीडिया **(Non Traditional Media)** है। यह एक वर्चुअल वर्ल्ड बनाता है। जिसे इंटरनेट के माध्यम से पहुंच बना सकते है। यह एक विशाल नेटवर्क है। जो कि सारे संचार को जोड़े रखता है। यह संचार का एक बहुत अच्छा माध्यम है। यह तीव्र गति से सूचनाओं के आदान–प्रदान करने जिस में हर क्षेत्र की खबरे होती है को समाहित किए होता है।

सोशल मीडिया सकारात्मक भूमिका अदा करता है जिससे किसी भी व्यक्ति, संस्था, समूह और देश आदि को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से समृद्व बनाया जा सकता है। सोशल मीडिया के जरिए ऐसे कई विकासात्मक कार्य हुए है जिनसे कि लोकतंत्र को समृद्व बनाने का काम हुआ है। जिस से किसी भी देश की एकता, अखंडता, पंथ निरपेक्षता, समाजवादी गुणों में अभिवृद्वि हुई है।

हम ऐसे कई उदाहरण देख है, जो की उपरोक्त बातो को पुष्ट करते है जिन में **INDIA AGAINST CORRUPTION** को देख सकते है जो कि भ्रष्टाचार के खिलाफ महाअभियान था। जिसे सड़को के साथ–साथ सोशल मीडिया पर भी लड़ा गया। जिसके कारण विशाल जनसमूह अन्ना हजारे के आंदोलन से जुड़ा और उसे प्रभावशाली बनाया। पिछले आम चुनाव के दौरान, राजनीतिक पार्टियों ने जमकर सोशल मीडिया का उपयोग कर आमजन को चुनाव को जागरूक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी।

इस आम चुनाव में सोशल मीडिया के उपयोग से वोटिंग प्रतिशत बढ़ा, साथ ही साथ युवाओं में चुनाव के प्रति जागरूकता बढ़ी। सोशल मीडिया के माध्यम से ही ''निर्भया'' को न्याय दिलाने के लिए विशाल संख्या में युवा सड़को पर आ गए जिससे सरकार दबाव में आकर एक नया एवं ज्यादा प्रभावशाली कानून बनाने पर मजबूर हो गई। लोकप्रियाता के प्रसाद यह एक बेहतरीन प्लेटफार्म है जहॉ व्यक्ति स्वंय को अथवा अपने किसी उत्पाद को ज्यादा लोकप्रिय बना सकता है।

आज फिल्मों के ट्रेलर, टी.वी. प्रोग्राम का प्रसारण भी सोशल मीडिया के माध्यम से किया जा रहा है। वीडियो तथा ऑडियो चैट भी सोशल मीडिया के माध्यम से सुगम हो पाई है। जिनमें फेसबुक, व्हाट्सऐप, इंस्टाग्राम कुछ प्रमुख प्लेटफार्म है।

सोशल मीडिया जहॉ सकारात्क भूमिका अदा करता है वहीं कुछ लोग इसका गलत उपयोग भी करते है। सोशल मीडिया का गलत तरीके से उपयोग कर ऐसे लोग दुर्भावनाएं फैला कर लोगों को बांटने की कोशिश करते है। सोशल मीडिरूा के माध्यम से भ्रामक और नकारात्मक जानकारी साक्षा की जाती है जिससे की जनमानस पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। कई बार तो बात इतनी बढ़ जाती है कि सरकार सोशल मीडिया के गलत इस्तेमाल करने पर सख्त हो जाती है और हमने देखा है की सरकार को जम्मू कश्मीर जैसे राज्य में सोशल मीडिया पर प्रतिबंध तक लगाना पड़ता है। मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र, पंजाब, हरियाण, चण्डीगढ़ में हुए किसान आंदोलन में भी सोशल मीडिया पर प्रतिबंध लगा दिया गया ताकि असामाजिक तत्व किसान आंदोलन की आड़ में किसी घटना को अंजाम न दे पाए।

जिस प्रकार एक सिक्के के दो पहलू होते है, ठीक उसी प्रकार सोशल मीडिया के भी दो पक्ष है। जो इस प्रकार है।

दैनिक जीवन में सोशल मीडिया का प्रभाव :–

01. यह बहुत तेज गति से होने वाला संचार का माध्यम है।
02. यह जानकारी को एक ही जगह इकट्ठा करता है।
03. सरलता से समाचार प्रदान करता है।
04. सभी वर्गो के लिए है, जैसे कि शिक्षित वर्ग हो या अशिक्षित वर्ग।

05. यहाँ किसी प्रकार से कोई भी व्यक्ति किसी भी कंटेट का मालिक नहीं होता है।
06. कंटेट, वीडियो, सूचना, डॉक्यूमेंटस आदि को आसानी से शेयर किया जा सकता है।
07. कम खर्चीला है।
08. सुविधाजनक होता है।
09. कवरेज क्षेत्र में कहीं पर भी उपयोग कर सकते है।
10. समाचार तत्काल वाला भी उपलब्ध रहता है।
11. वीडियो शेयर कर सकते है।
12. अपनी बात रख सकते है।
13. मदद के लिए एक बेहतरीन माध्यम है।
14. यह हमारे जीवन का हिस्सा बन चुका है।
15. ज्ञानवर्धक जानकारियाँ मिलती है।
16. कोरोना महामारी की दैनिक रिर्पोट मिलती है।
17. लॉकडाउन कहाँ–कहाँ पर है सूचना मिलती है।
18. क्या–क्या छूट है पता चलता है।
19. लॉकडाउन में छूट का समय क्या है पता चलता है।
20. अस्तपतालो में बेड रिक्त है या फुल की जानकारी
21. दवाओं का आनलाइन मंगवाना।
22. किसी सरकारी अफसर से मदद की गुहार लगाना।
23. शिकायत करना, सोशल मीडिया के माध्यम से।
24. कोरोना महामारी में मनोरंजन का साधन रहा।
25. प्रतियोगिता की तैयारी में जरूरी अंग है।
26. ऑनलाइन क्लासेस संचालित रहती है।
27. हर प्रकार की जानकारी हर समय उपलब्ध रहती है।
28. दूसरो की भावनाओं को समझने का मौका मिलता है।
29. प्ले पल की खबर सोशल मीडिया द्वारा रहती है।
30. दुनिया के हर कोने से सोशल मीडिया की संपर्क है जो हर क्षेत्र से जुड़ा हुआ है।

सोशल मीडिया का दुष्प्रभाव :–

* यह बहुत सारी जानकारी प्रदान करता है जिनमें बहुत सी जानकारी भ्रामक भी होती है।

* जानकारी को किसी भी प्रकार से तोड़–मरोड़कर पेश किया जा सकता है।

* किसी भी जानकारी का स्वरूप बदलकर वह उकसावे वाली बनाई जा सकती है जिसका परिणाम काफी खतरनाक हो सकता है।

* यहॉ कंटेट का कोई मालिक न होने से मूल स्रोत का अभाव होना।

* प्राइवेसी पूर्णतः भंग हो जाती है।

* फोटो या वीडियो की एडिटिंग करके भ्रम फैला सकते है। जिनके द्वारा कभी–कभी दंगे जैसी आशंका भी उत्पन्न हो जाती है।

* साइबर अपराध सोशल मीडिया से जुड़ी सबसे बड़ी समस्या है।

* बटन दबाते ही गलत जानकारियॉ दूसरे तक पहुंच जाती है।

* सोशल मीडिया पर गलत वीडियो, चित्र उपलब्ध रहती है जो छोटे बच्चो के लिए खतरा रहता है।

* धोखेबाजो से इस साइट पर ज्यादा सावधान रहना पड़ता है वरना, धन, सम्मान का काफी नुकसान हो सकता है।

* नाबालिग बच्चों को ज्यादा सावधान रहना पड़ता है क्योंकि इस सोशल मीडिया में कई आपत्तिजनक वीडियो, फोटो अपलोड रहता है।

कोरोना वायरस से बचाव के लिए बनाए ये तीन खास उपकरण जो इस प्रकार है :–

एम.एन.एन.आई.टी. ने कोरोना के खिलाफ जंग छेड़ दी है। इसके बचाव के लिए कई उपकरण का निर्माण किया है। जिसमें समय और कीमत कम खर्च होगी। सिविल विभाग के प्रो0 वी.पी. सिंह ने स्टिूलोबिन नाम से एक पोर्टेबल यूबी एंड सी आधारित स्टरलाइजिंग बॉक्स बनाया है।

इसमें दो मिनट खाद्य सामग्री, फाइल, मास्क रखने पर कोरोना मुक्त हो जाएगा। इसका उपयोग कार्यालय, हॉस्पिटल में आसानी से किया जा सकता है। इसकी कीमत मात्र 1300.00 (तेरह सौ रूपये) है। वहीं स्टरलाइजेशन टूल्स और पावर बेस हेड्स फ्री वॉश बेसिन बनाया है। इसमें बिना नल हुए लोग हाथ–मुँह धुल सकते है। यह बेसिन इलेक्ट्रानिक है पैर से दबाने पर साबुन निकलेगा फिर पैस से स्वीच दबाएयें तो पानी निकलेगा लोग मशीन को बिना हुए ही हाथ की धुलाई कर सकते है। यह बाजार में पॉच हजार में मिल जाता है। इसके साथ्ज्ञ पेपर को सेनिटाइज करने के लिए एक मशीन बनाई है। जिसमें कोई पत्र डालकर कोरोना मुक्त कर सकते है। संस्थान के निदेशक प्रो0 राजीव त्रिपाठी ने कहा कि एम.एन.एन.आई.टी. विभिन्न नवीन उपायो पर काम कर रहे है जो नोबेल कोरोना वायरस के फैलने की श्रृंखला को तोड़ने में लाभदायक और सहायक होगा। चिकित्सा उपकरणों को इस तरह से डिजाइन किया जा सकता है कि यह डॉक्टरो को सुरक्षित रख सके और कोविड–19 संकट की विशिष्ट आपातकालीन जरूरतो को पूरा कर सके।

जैसे की स्टेपोस्कोप शामिल है। भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिक विभाग ने अपने सेंटर कोर औगमेटिग वॉर कोविड–19 हेल्थ क्राइसिस (कवच) पहल के साथ पॉच कंपनियों के वेंटीलेटर, रेस्पिरेटरी, एड्स और अन्य महत्तवपूर्ण चिकित्सा उपकरणें की तालाश की, उनका मूल्यांकन किया और उन्हे मदद उपलब्ध कराई।

अध्ययन मॉडल :–

सार्वजनिक स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने के लिए सोशल मीडिया स्वास्थ्य हस्तक्षेपों में व्यवहार परिवर्तन के कुछ सिद्वांतो को शामिल करने की आवश्यकता पाई गई। सोशल मीडिया पहलो पर लागू होने पर फायदेमंद हो सकते है क्योंकि वे सार्वजनिक स्वास्थ्य अधिकारियों को व्यवहार बदलने की प्रक्रिया को समझने में मदद करते है और सटीक तरीके से क्यों व्यवहार करते है, इस प्रकार स्वास्थ्य अधिकारियों को स्वास्थ्य हस्तक्षेपो का मूल्यांकन और संशोधन करने में सक्षम बनाता है। स्वास्थ्य विश्वास मॉडल के अनुसार लोग निवारक कार्यवाही करने की प्रवृत्ति रखते है। यदि उन्हे लगता है कि उन्हे गंभीर रूप से खतरा है। इसके आधार पर स्वास्थ्य हस्तक्षेपो को संवेदनशीलता और लाभो के बारे में व्यक्तियों की विशिष्ट धारणाओं को संबोधित करना चाहिए।

लोगो की जीवन शैली में बदलाव करके स्वास्थ्य में सुधार के लिए व्यवहार परिवर्तन दृष्टिकोण पाया गया है। यह माना जाता है कि व्यक्तियों को उपने स्वास्थ्य से संबंधित एक विशिष्ट मुद्दे के बारे में बुनियादी तथ्यो को समझना चाहिए ताकि वे विशेष रूप से एक संक्रामक बीमारी से खतरे की भावना के परिणाम स्वरूप अपनी जीवन शैली को बदलने में सक्षम हो सके। इस संदर्भ में व्यक्तियों को कौशल का एक समूह सीखना चाहिए और उपयुक्त सेवाओ तक पहुंच प्रदान की जानी चाहिए। व्यवहार में बदलाव में हाथ धोना, मास्क पहनना, सोशल डिस्टेंसिंग, सार्वजनिक समारोहो से बचना, स्वच्छता और अलगाव शामिल है। लेकिन इन्ही तक सीमित नहीं है। सार्वजनिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किए गए हस्तक्षेप समाज में स्वास्थ्य की गुणवत्ता में सुधार कर सकते है। सोशल मीडिया स्वास्थ्य अभियान सकारात्मक व्यवहार परिवर्तनो को प्रेरित कर सकते है और यहॉ तक कि व्यक्तियों में नाकारात्मक को भी समाप्त कर सकते है।

लारंजो एट अल के अनुसार सोशल मीयि हस्तक्षेपों के लाभ लागत–दक्षता, सर्वव्यापकता और भौगोलिक स्थिति के बावजूद आम जनता के लिए स्वास्थ्य हस्तक्षेपों को प्रसारित करने के अधिक अवसरो के द्वार खोल दिए है। इस प्रकार सार्वजनिक स्वास्थ्य संवर्धन और सकारात्मक व्यवहार परिवर्तन हुए है। इसलिए इस अध्ययन के उद्देश्यों को निर्देशित करने के लिए एक एकीकृत वैचारिक मॉडल विकसित किया गया था। यह माना गया की स्वास्थ्य संवर्धन कार्यक्रमों के उपकरण के रूप में सोशल मीडिया के हस्तक्षेप से सार्वजनिक जागरूकता और मध्यस्थता कारको के रूप में व्यवहार परिवबीच बात–चीत के माध्यम से कोविड–19 के खिलाफ सार्वजनिक सुरक्षा और रोकथाम में वृद्वि होगी।

ये प्राथमिक निर्माण मुख्य रूप से सैद्वांतिक पृष्ठभूमि, प्रासंगित पिछले अध्ययनों और व्यवहार परिवर्तन सिद्वांत (स्वास्थ्य विश्वास सिद्वांत) से प्राप्त होते है। इस में प्राथमिक रूचि के चर (स्वतंत्र चर) सोशल मीडिया प्लेटफार्म थे। मध्यस्थता कारको (सार्वजनिक जागरूकता और व्यवहार परिवर्तन के माध्यम से आश्रित चर (कोविड–19) के खिलाफ सार्वजनिक सुरक्षा में भिन्नता पर स्वतंत्र चर के प्रभाव का अध्ययन किया गया। सोशल मीडिया कवरेज द्वारा बीमारी की व्यापकता को नियंत्रित किया जाता है। प्रिंट मीडिया, सोशल मीडिया और इंटरनेट द्वारा शुरू किए गए अभियानो के माध्यम से संक्रामक रोगों से संबंधित व्यवहार परिवर्तन शिक्षित लोगों की एक छोटी आबादी तक सीमित है। इस की तुलना में, टेलीविजन विज्ञापन, एक बड़ी आबादी के संक्रमक रोगों के प्रति व्यवहार को प्रभावित करने में सक्षम होते है। जिसमें आम तौर पर कम शिक्षित लोग होते है। इसलिए टेलीविजन विज्ञापन, अन्य प्रकार के मीडिया की तुलना में अधिक प्रभावी होते है। सोशल मीडिया से सकारात्क प्रभाव को उजागर किया।

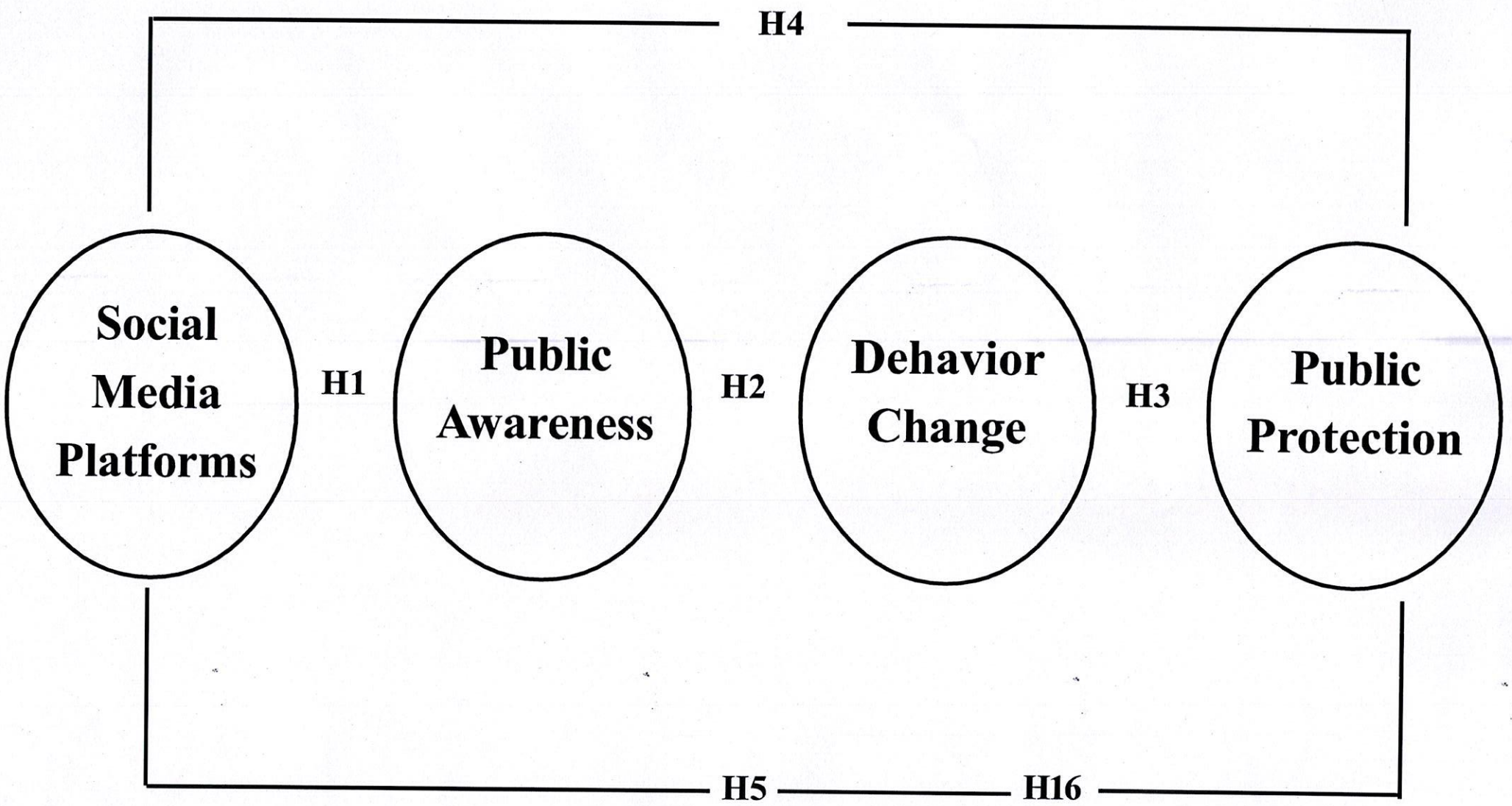

आकृति 1

अध्ययन मॉडल का आरेख

उपरोक्त मॉडल के आधार पर एक महामारी रोग के रूप में कोविड–19 के बारे में जन जागरूकता बढ़ाने में सोशल मीडिया अभियानो की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित परिकल्पना तैयार की गई है।

परिकल्पना 1(H1) – सोशल मीडिया प्लेटफार्म के उपयोग से सार्वजनिक स्वास्थ्य जागरूकता काफी बढ़ रही है।

परिकल्पना 2(H2) – सार्वजनिक स्वास्थ्य जागरूकता सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवहार परिवर्तन में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

परिकल्पना 3(H3) – सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवहार परिवर्तन सार्वजनिक स्वास्थ्य सुरक्षा में उल्लेखनीय रूप से वृद्वि कर रहा है।

परिकल्पना 4(H4) – सोशल मीडिया प्लेटफार्म के उपयोग से सार्वजनिक स्वास्थ्य सुरक्षा में उल्लेखनीय वृद्वि हो रही है।

परिकल्पना 5(H5) – सार्वजनिक स्वास्थ्य जागरूकता सोशल मीडिया प्लेटफार्म और सार्वजनिक स्वास्थ्य जागरूकता के बीच संबंधो में महत्वपूर्ण रूप से मध्यस्थता कर रही है।

परिकल्पना 6(H6) – सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवहार परिवर्तन सोशल मीडिया प्लेटफार्म के उपयोग और सार्वजनिक स्वास्थ्य जागरूकता के बीच संबंधो में महत्वपूर्ण रूप से मध्यस्थता कर रहा है।

तरीका :–

हमने एक खोजपूर्ण और वर्णानात्मक डिजाइन के साथ एक मात्रात्मक पद्वति को नियोजित किया शोध के वैचारिक मॉडल की पुष्टि करने और शोध परिकल्पनाओ की जॉच करने के लिए, डेटा एकत्र करने के लिए एक सर्वेक्षण नियोजित किया गया था। (मल्टीमीडिया परिशिष्ट) इस शोध की लक्षित आबादी में जाईन के किसी भी सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर सभी अनुयायी शामिल थे। कई प्रश्नो को संशोधित किया गया था और संशोधित प्रश्नावली का उपयोग उन नागरिको पर पायलट परीक्षण के लिए किया गया था जो कोविड–19 महामारी के दौरान सवालो की समझ को जॉचने के लिए 20 नागरिकों के साथ एक नाटक किया गया था। कुछ संशोधन किए गए, जिसके परिणावस्वरूप आसानी से समझने योग्य सर्वेक्षण प्रश्नावली बन गई।

तालिका एक

माप आईटम

निर्माण और माप आइटम

सोशल मीडिया प्लेटफार्म (एस.एम.पी.)

एस.एम.पी. 1 फेसबुक मुझे करोना को पहचानने में मदद करता है।

एस.एम.पी. 2 इंस्टाग्राम मुझे कोरोना पहचानने में मदद करता है।

एस.एम.पी. 3 ट्विटर मुझे कोरोना पहचानने में मदद करता है।

एस.एम.पी. 5 यू ट्यूब कोरोना रोकने में मदद करता है।

जन जागरूकता (पी.डब्ल्यू)

PAW1 कोरोना रोकने के तरीका फेस बुक से मिला है।

PAW2 कोरोना रोकने में इंस्टाग्राम मददगार रहा।

PAW3 ट्वीटर से महामारी के खिलाफ योगदान मिला।

सार्वजनिक व्यवहार परिवर्तन (पी.बी.सी.)

पी.बी.सी. 1 – स्वस्थ्य भोजन व कोरोना रोकने में मदद करता है।

पी.बी.सी. 2 – अपने व्यवहार को कोरोना रोकने में मदद करता है।

सार्वजनिक सुरक्षा (पी.पी.आर.)

पी.पी.आर. 1 – मुझे कोरोना से बचाने के लिए सोशल मीडिया का योगदान काफी रहा।

पी.पी.आर. 2 – सोशल मीडिया प्लेटफार्म से संक्रमण से बचाने के लिए व्यवहार परिवर्तन में योगदान दिया।

तालिका 2

नमूना प्रोफाइल (एन – 2555) एन (%) 1

विशेषता	
लिंग	
पुरूष	
महिला	
उम्र साल	
18 –	33
34 –	43
44 –	53
54 –	63
	64

शैक्षणिक स्तर :–

हाई स्कूल या उस से कम

डिप्लोमा

स्नातक

स्नातकोत्तर

पी.एच.डी.

प्रशासनिक :–

तालिका तीन

अनुसंधान मदो और चारो के वर्णानान्तक ऑकड़े :–

वर्ग		मध्य (SD)
सोशल मीडिया प्लेटफार्म (SMP)		
SMP 1	-	**3.84**
SMP 2	-	**3.07**
SMP 3	-	**3.17**
SMP 4	-	**3.54**
SMP 5	-	**3.81**
सार्वजनिक जागरूकता (PAW)		
PAW 1	-	**3.86**
PAW 2	-	**3.17**
PAW 3	-	**3.18**
PAW 4	-	**3.58**
PAW 5	-	**3.71**

*सार्वजनिक व्यवहार परिवर्तन (**PBC**):–*

PBC 1	**-**	**3.94**
PBC 2	**-**	**3.28**
PBC 3	**-**	**3.26**
PBC 4	**-**	**3.67**
PBC 5	**-**	**3.72**

सार्वजनिक सुरक्षा (पी.पी.आर.) :–

PPR 1	**-**	**3.99**
PPR 2	**-**	**3.99**
PPR 3	**-**	**3.96**

प्रमुख निष्कर्ष :–

इस अध्ययन में हमने सार्वजनिक स्वास्थ्य जागरूकता और व्यवहार परिवर्तन के माध्यम से कोविड–19 महामारी के दौरान स्वास्थ्य और सुरक्षा पर सोशल मीडिया प्लेटफार्म उपयोग के प्रभावशील रहा है। इस चर्चा से पता चलता है कि सोशल मीडिया प्लेटफार्म के उपयोग और सार्वजनिक स्वास्थ्य सुरक्षा के बीच सार्वजनिक स्वास्थ्य जागरूकता और व्यवहार परिवर्तन के बीच प्रत्यक्ष प्रभाव रहा। इसका परिणाम पुष्टि करते है की कोरोना महामारी और सार्वजनिक जागरूकता, व्यवहार परिवर्तन सोशल मीडिया के प्रभाव से प्रभावित रहा। जिस में सुरक्षा और अपनी बात रखने का सुनहरा मंच रहा। कोरोना महामारी की लड़ाई में सोशल मीडिया एक जरूरी सेवा के रूप में और इस महामारी की लड़ाई में यह एक सैनिक के रूप में उभर कर सामने आया है।

कोरोना वायरस का नाम व शुरूआत एवं सोशल मीडिया :–

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना वायरस की महामारी का नया नाम कोविड–19 दिया है। कोविड–19 से अब तक दुनिया में लगभग 16.4 करोड़ लोग संक्रमित हो चुके है, जबकि लगभग 50,34,000 लोगो की मौत हो चुकी है। जिसकी शुरूआत चीन देश के वुहान शहर में 2019 में दिसंबर मध्य में हुई। कोविड–19 गंभीर तीव्र श्वसन सिंड्रोम कोरोना वायरस के कारण होता है। जो एक खतरनाक महामारी बन कर उभरा। जो धीरे–धीरे पूरे विश्व में अपनी जड़े जमा ली है। सार्वजनिक और स्वास्थ्य देख–भाल सेटिंग्स में महामारी के आगे प्रसार को रोकने के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सोशल मीडिया प्लेटफार्म का उपयोग सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवहार परिवर्तन और कोविड–19 के खिलाफ सार्वजनिक सुरक्षा के बारे में जागरूकता को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है। सोशल मीडिया प्लेटफार्म में विभिन्न प्रकार की नेटवर्किंग साइट्स जैसे फेसबुक, सूचना प्रसार प्लेटफार्म । जैसे यू ट्यूब और माइक्रोब्लॉगिंग सेवाएं जैसे ट्विटन शामिल है। इन प्लेटफार्मो और कई अन्य का उपयोग संभावित स्वास्थ्य और रोग जोखिमों और हस्तक्षेपो के साथ–साथ स्वस्थ्य जीवन शैली और प्रभावी स्वास्थ्य नीतियॉ और रणनीतियों के बारे में ज्ञान और जानकारी बनाने और प्रकाशित करने के लिए किया जा सकता है। सोशल मीडिया प्लेटफार्म संचार के एक शक्तिशाली साधन का निर्माण करते है जिसका उपयोग संक्रामक रोगों, विशेष रूप से नए लोगों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए किया जा सकता है। जनता उभरते बीमारियों की जानकारी एवं बचाव के लिए पारंपरिक और सोशल मीडिया दोनो की ओर रूख करते है। जो काफी लाभदायक रहती है।

विश्व में सोशल मीडिया :–

दुनिया भर में और भारत में सोशल मीडिया यूजर्स यह 4.72 अरब तक पहुंच गई है। यह दुनिया की आबादी के 60 प्रतिशत से अधिक के बराबर है। डेटा के मुताबिकएक साल में आधे अरब से अधिक नए उपयोगकर्ता सोशल मीडिया से जुड़े है। ताजा रिपोर्ट के अनुसार अप्रैल 2021 तक 4.33 बिलियन लोग सोशल मीडिया यूजर्स है। आज के समं हर उम के व्यक्ति के जीवन में सोशल मीडियाएक अहम हिस्सा बन गया है। इसके जरिये हम दुनिया के किसी भी कोनो में बैठे इंसान से सिर्फ एक क्लिक पर जुड़ सकते है। वर्चुअल वर्ल्ड में अपने दोस्तो, रिश्तेदारो या किसी अनजान से जुड़ना एक नया अनुभव देता है।

हर साल 30 जून को विश्व सोशल मीडिया दिवस मनाया जाता है। ताकि लोगो को यह बताया जा सके कि यह कम्यूनिकेशन के लिए एक महत्तवपूर्ण टूल के रूप में उभरा है। कोराना महामारी के दौरान सोशल मीडिया प्लेटफार्म लोगो के लिए हेल्पलाईन बन कर सामने आया है।

पहला सोशल मीडिया प्लेटफार्म **Sixdegress 1997** में लॉन्च किया गया था। इस की स्थापना एंड्रयू वेनरिच ने की थी। वेबसाइट ने यूजर्स को अपने दोस्तो परिवार के सदस्यों को सूचीबद्व करने, बुलेटिन बोर्ड और प्रोफाइल जैसे कई विशेषताएं थी। साल 2001 में इसे बंद कर दिया गया। शुरूआत में फ्रेडस्टर, फेसबुक का इस्तेमाल लोग बात–चीत करने के लिए करते थे। हलांकि अब बड़े प्लेटफार्म जैसे ट्विटर, इंस्टाग्राम इस्तेमाल किया जा रहा है।

भारत में सोशल मीडिया

आज के समय में सोशल मीडिया के इस्तेमाल न सिर्फ़ स्टेटस यिम्बले के लिए बल्कि एक जरुरत के रुप में आकार ले चुका है इस बात में कोई नही है री इंटरनेंट कान्ति के दौर मे सोशल मीडिया प्लेट कार्म्स के रुप में दुनिया को दौर में सोशल मीडिया प्लेट कार्म्स के रुप में दुनिया को एक बेहपरीन तोहफा मिला है फेसबुक टविटर इस्टाग्राम व्हसट सप्प पिटरोन्ट गूगल प्लस ऐसे ही अनेक प्लेट फौर्म पूरे विश्व की एक यूत्र में पिरोने की ताकत रखते है यह सोशल मीडिया विभिन्क अवसरो पर आवसरो पर आने महत्व को साबित भी किया है चाह देशी चुनाव हो अथ्वा विदेशी धरती पर कोई आंदोलन दो या फिर पर्सनल ब्रांडिग ही क्यो न हो आज लाइक्स कालोवर्स शेयर जैसे शब्द हर एक जुबान पर छपे रहते है एक स्टडी के अनुसीर भरतमें लोकसभा चुनाव में नगभग 150 सीटो पर सोश्ल मीडिया ने जीत मं बहुचर्चितचुनाव में अरविन्द के जरी वाल पारा नवगठित पार्टी ने अपना 80 फीरुदी कैम्पेन सोशल मीडिया के माध्यम से व्यक्तिगत बांडिग के लिए भी योशल मीडिया के लिए भी सोशल मीडिया का इस्तेमाल नेताओ खिलाडियों अभिनेताओ दारा धडल्ले से किया जा रहा है आई टी प्रीके शनल्स से लेकरर गाव तक का हो सभी आप को फेसबुक पर अपने मित्राक को संबधित गतिविधियो को शेयर करते है सोशल मीडिया का गलत इस्तेमाल भी किया जा रहा है जिस्में दंगे नफरत गलत जानकारी भम आदि सम्मिलीत है भरत मै सोशल मीडिया एक परिवार का सदस्य रैसा हो गया है रो कसफी किमती और अनामखे उपधर है जाम हमारे जीवन में बसा है

छत्तीसगढ में सोशल मीडिया

प्रधानमंत्री नरेन्द्रमोदी के डिजीटल इंडिया की क्रांति का हिस्सा बन रहे छतीसगढ के नेमा धीते धीते सोशल मीडिया केडली होते नजर आ रहे है भाजपा हो या क्रांग्रेस अब नेता ओ में हो मची हुई रि सोशल मीडिया मं सब से ज्पादा टूंड कैन हो रहा है क्षगे में बडे शहर रायपुर बिलासपुर के जितने सोशल मीडिया यूजर्स होगे उतने में आधे से ज्पादा तो ग्रामीण क्षेत्रो से संबध रयाते है क्यो की आज हर कोई इस से जुडा है व अपनी जरुरतो में इसे शामिल रिया गया है छ.ग. मे भी सीशल मीडिया प्लेटफार्म पर बडे पैमने पर लोग जुडे हुऐ है और अपना काम कर रहे है कई लोग विवादो को आग दे कर उसे सूलगाजे है जो की अपना स्वार्थ पूरा करना होता है फेसबुक की तरह अबिकापुर के दो युवा इंजीनियरो ने बनइि छ.ग.की पहली सोशल मीडिया साइट बनाई है जिस का नाम काकरतहस डाट काम kakarathas.com बनाई है इ के बाद से इसी चर्चा पुरे छ.ग. व अम्बिकपुर शहर मे है अैर इस सोशल साइट पर भी अपना अकांउट बना कर इस- से जुडते जा रहे इसे ऋ व उस के साभी ने मिल कर बनाया हैजो आपने आप मे अदभूत है जो की सोशल मीडिया मे इंटरनेट का इस्तेमाल कर आपने दोस्तो और रिश्ते इार के साथ रुडना दोस्ती रिश्तेदारी शिक्षापर नौकरी पर चर्चा जानकारी रहती है इस ो हम भारत या विदेश मे घट रहे घटनाओ के विषय मे जान सकते है

भारत में कोरोना वायरस कें रोकथाम

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी नें कोरोना वायरस सें बचने के उपायो में 22 मार्च 2020 के दिन संकल्प और संयम के रू॰ में जनता कफर्यु लगाया था। जिसे सभी के सहयोग से अच्छा प्रतिफल रहा जो की पूरे भारत में लौक डाउन का पहला कदम रहा अधिकारिक सलाह में आम तौर पर अच्छी व्यक्तिगत स्वच्छता और नियमित रूप से हाथ धोने के लिए कहने तक सीमित है। जो लोग खुद को संक्रमित होने का संदेह करते हैं, उन्हे सर्जिकल मास्क, पहनने और चिकित्सा सलाह के लिए डॉक्टर को बुलाने के लिए कहा गया। सोशल दुरी बना कर रखना व घर पर निगरानी मे रहना बताया गया। बहुत सारे देशो ने या तो मुख्यभूमि चीन, डुबई प्रांत या सिर्फ बुहान की यात्रा के खिलाफ चेतावनी जारी की थी। लोगो से बिना काम के घर से बाहर न निकने, सर्जिकल मास्क लगाने सेनेटरी हैड सैनिटाइजर और डिसइंकेक्टेंट जिस सें लोग अपने हाथो और कपडों की साफ रखना चाहते हैं। इस्तमाल करे । सुरक्षित रहें। करोना के प्रचार प्रसार को रोकने के लिए हाथ धोने कि सुफारीस कि जाति हैं। कम से कम 20 संकेड के लिए साबुन और पानी से हाथ धोए खासकर बाथरूम जाने के बाद खाने से पहले और अपनी नाक बहाने के बाद, खसने या छीकने के बाद अक्सर। भारत सरकार ने चेहरे और नाक को ढंकने के लिए मास्क को सावधानी से लंगाए और चेहरे और मास्क के बीच किसी भी अंतराल कम करने के लिए सुरिक्षत रूप से टाई करने की सलाह दी। दो गज कि दूरी, बेवजह बाहर निकलने, मास्क लगाने की पाबंदी से बचाया जा सके जो की व्यकियो के व्यवहारो पर निर्भर रहता हैं।

(covid -19) कोरोना वायरस के लक्ष्ण

1. खांसी बार– बार आना।
2. संस में तकलीफ होना ।
3. संस लेने में कठिनाई आना।
4. नए कोरोनोवायरस संक्रमण को लक्षणो की गंभीरता व्यक्ति सें दुसरे व्य.क्ति में भिन्न होते हैं। कुछ हल्के होते हैं।
5. कुछ गंभिर होते हैं और यहा तक कि मृत्यु भी हो सकति हैं, इस बिमारी को गहराई से समझा जा सकता हैं।
6. लेकिन गंभीर रूप से बीमार रोगी बुजुर्ग है या अन्य गंभीर बीमारी रूप से बीमार रोगियों के समान हैं।
7. बार बार छिकनॉ।
8. बुखार लगातार रहेना।
9. व्यक्ति के शरीर को बहुत ज्यादा कमजोर करता हैं।
10. लंक्रमण तेजी से फैलता हैं।
11. दुसरे व्यक्ति को भी संक्रमित कर सकता हैं।
12. सुखी खासी लगातार रहती हैं।
13. थकान पुरे शरीर पर बना रहता हैं।
14. स्वाद और गंध का पता नही चलता हैं।
15. गले मे खराश रहता हैं ।
16. खुजली ओर दर्द होना।
17. दस्त आना बार बार लगातार होना।
18. त्वचाा पर चकंते आना या हाथ पैर पर की उंगलियो का रंग बदल जाना।
19. सीने मे दर्द या दबाव होना।
20. बोलने या चलनें – फिरने में असमर्थ होना।
21. सरदर्द व ऑख आना।

(covid -19) के समय में सोंशल मीडिया ने क्या बताया

(covid -19)

महामारी की शुरूआत के साथ सोशल मीडिया तेजी से सूचना निर्माण प्रसार और उपयोग के लिए एक महत्वपुण संचार उपकरण बन गया हैं। इस व्यापक समीक्षा में , हमने नंवबर 2019 सें नंवबर 2020 तक पहलें प्रकांप क़े दौरान COVID और सोशल मीडिया से संबंधित सहकर्मी समिक्षा अनुभवजन्य अध्ययनों कें विश्लेषण सें हमने पांच व्यापक सार्वजनिक स्वास्थ्य विषयों पर की पहचान की। ऑनलाइन सोशल मीडिया प्लेटफारर्म ओर covid-19 की भुमिका के संबध में इन विषयो पर ध्यान केंद्रित किया गया सार्वजनिक दुष्टिकोण का सर्वेक्षण करना, सुचना विज्ञान की पहचान कराना मानसिक स्वास्थ्य का आंकलन करना, covid-19 मामलों का पता लगाना या भविष्यवाणी करना, महामारी के लिए साकारी प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण कारना और रोकथाम शिक्षा विडियो में स्वास्थ्य जानकारी की गुणवत्ता का मूल्यांकन करना इसके अलावा हमारी समीक्षा covid-19 से संबधित सोशल मीडिया से डेटा पर मशीन लर्निंग के अनुप्रयोग पर अध्ययन की कमी और बास्तविक को निगरानी का दस्तावेजी करण करने वाले अध्ययनों की कमी पर जोर देती है जिसे covid-19 पर सोशल मीडिया के डेटा गया था।

covid-19 के लिए स्वास्थ्य संबंधी सूचनाओं के प्रसार और सूचना गलत सूचना से निपटने मे सोशल मीडिया की महत्वपुर्ण भुमिका हो सकती हैं।

गंभीर तीव्र श्वसन सिंडोम कोरोनावायरस **(SARS- covid)** और परिणाम **(covid -19)** एक महत्वपुण अंतरराष्ट्रीय सार्वजनिक स्वास्थय समस्या हैं। 16 जनवरी 2021 तक दुनिया भर में अनुमानित 94 मिलियन लोंग वायरस सें संक्रमित हो चुके थे, जिसमें लगभग 20 लाख लोग मारे गए थे महामारी के परिणमस्वरूप सोशल मिडिया **(covid -19)** के संबंध मे विभिन्न घटनाओं या सार्वजनिक स्वास्थ्य नीतियों के प्रति जनता की राय, धारणा और दुष्टिकोण के लिए पसंद का मंच बना रहा हैं सोशल मिडिया सरकारों संगठनों और विश्वविद्यायालयों कें लिए एक महत्वपुर्ण संचार उपकरण बन गया हैं। कई अध्ययनों ने पहलें हो सोशल मिडिया डेटा का उपयोग संक्रामक रोगो के प्रकोपों की पहचान करने और उनका पता लगाने और सार्वजनिक दुष्टिकोण व्यवहार और धारणओं की व्याख्या करने में मदद करने के लिए किया हो 3,4,5,6, सार्वजनिक स्वास्थ्य अनुसंधान के कई पहलुओं का पता लगाने के लिएं सोशल मिडिया विशेष रूप से ट्रविटर का उपयोग की छह श्रेणियों की पहचान की अर्थात सामाग्री विश्लेषण निगरानी ,सगाई भर्ती , एक हस्तक्षेप के हिस्से के रूप में और ट्रविटर का उपयोग किया जाता सकता हैं एक व्यवस्थित समीक्षा ने स्वास्थय अनुसंधान के लिए ट्रविटर उपयोग की छह क्षेणियों को पहचान की अर्थात सामग्री विश्लेषण उपयोगकर्ताओ के नेटवर्क विश्लेषण

हालांकि इस समीक्षा में ट्रविटर डेटा के उपयोग से स्वास्थय, चिकित्सा या बीमारी जैसे व्यापक शोध शब्द शामिल थे और **(covid -19)** जैसे विशिष्ट रोग विषयों पर ध्यान केदित नहिं किया गया था। एक अन्य लेख नें **(covid -19)** पर ट्रविटर का विश्लेषण किया और 12 विषयों पर पहचान की जिन्हें चार मुख्य विषयों में वर्गीकृत किया गया था उत्पत्ति स्त्रोतो, व्यकितयों और देशो पर प्रभाव और **SARS- covid-2** के प्रसार को कम करने के तरिके इस अध्ययन में फरवरी, 2020 से पहले **covid-19** से संबधित ट्रविटर के लिए उपलब्ध नहि था जिससे महामारी का प्रारंभिक भाग गायब था और ट्रविटर के लिए डेटा 2 फरवरी और 15 मार्च 2020 के बीच सीमित था।

महामारी के दौरान आम जनता को स्वास्थ्य संबंधीत जानकारी देने के लिए सोशल मीडिया भी प्रभावी दंग से उपयोग किया जा सकता हैं उमरते हुए संक्रमण रोग जैसे खपत में व्द्वि का परिणाम हैं इस लिए बीमारी के जोखिम परिणमी निर्णय लेने और जोखिम व्यवहार के बारे मे लोगो की धरणा में सोशल मीडिया की महत्वपुर्ण भुमिका हैं 9,10 चुकि सोशल मिडिया पर जानकारी उपयोगकर्ताओं द्ववारा उत्पन्न की जाती हैं एसी जानकारी व्यक्तिपरक या गलत हो सकती हैं और इसमें अक्सर गलत सूचना और साजिश के सेक्षित शामिल होते हैं। इसी लिए यह जरूरी हैं कि सार्स–सी ओवी 2 जैसे उभरते खतरों के बारे मे आम जनमा को सटीक और समय पर जानकारी दी जाए।

एक व्यवस्थित समीक्षा ने उन प्रमुख दुस्टिकोणों का पता लगाया जिनका उपयोग सोशल मीडिया पर प्रकाशित शोध और उभरते संक्रमण रोगो में किया गया था 12 समिक्ष ने तीन प्रमुख दूष्टिकोणो की पहचान कि उभरति संक्रमक बीमारीयों मे जानता कि सुची और भावनाओं का आकलन उमरते सक्रमक मीडिया के उपयोग और सोशल मीडिया पर उमरते संक्रामक रोगो सें संबंधित चिकित्सा जानकारी की सटिकता का उपयोग हांलाकि इस समिक्षा नें उन अध्ययनों पर ध्यान केंद्रित नहि किया जो उभरते संक्रामक रोगो के प्रकोप को ट्रैक करने और भविषयवाणी करने के लिए सोशल मीडिया डेटा का उपयोग करते थे।

सहकर्मी – समीक्षा प्रकाशित शोध से जानकारी का विश्लेषण और प्रसार नीति निर्माताओं और सार्व जनिक स्वास्थय एजेसियो को आम जनता के लिए सटिक और समय पर ज्ञान अनुवाद के लिए हस्ताक्षेप डिजाइन करने के लिए मार्गदर्शन कर सकता हैं। इसलिए मौजुदा शोध की सीमाओं का ध्यान मे रखते हुए जिनका हमने पहले उल्लेखन किया हैं हमने Covid -19 संकट की शुरूआत के बाद से सोशल मीडिया की भुमिकाओं को समझने के उद्वेश्य सें एक व्यापक समीक्षा की। हमने सोशल मीडिया पर Covid -19 के प्रति जनमा के नजरीए और धारणाओ की सोंशल मिडिया पर Covid -19 के बारे मे जानकारी Covid -19 की भविषयवाणी और पता लगाने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग किया जाता हैं ।

सी ओवी आईडी 19 से संबंघित सोशल मीडिया के उपयोग की खोज करने वाले अघ्ययनों की समीक्षा आर्कसी और ओ माले की स्कणेपिंग समीक्षा विधियों के उपयोग से की गइ थी और लेवेंक अैर सहयोगियों 14 हमने समीक्षा के दायरे के लिए पांच चरणीय स्कोपिंग समीक्षा प्रोटो कोल और व्यवस्थित समीक्षा मेटा विषण एवसटेशन के लिए पंसदीदा रिपोर्टिग आइटम कापालनकिया

अप्रैल 2020 में covid 19ओपन रिसर्च डेटासेट चैलोज और google स्कौलर पर खोज पूर्ण खोजे की गई इन खोजों नम समीक्षा के दायरे को परिभाषित करने शोध प्रश्नो को विकसित करने और पात्रता मानदंड निर्धारित करने में मदद की इस तरह की गतिविधि के बाद medlineऔर pubmed sopus और psycinfo को इस समीक्ष के लिए चुना गया क्योकि इनमें चिकित्सा त्यवहार विज्ञान मनोविज्ञान स्वास्थ्य देखभालप्रणली और नदा निक विज्ञान के क्षत्र में सहकर्यी समीक्षा किए गयसाहित्य शमिल हैं प्रमुख खोज शब्दों कीविविधजाएं पैनल मे पाई जा सकती है वर्तमान महामारी की शुरुआत के बाद से 19 ले खों मी समीक्षा की गई और उन्हे कभूतपूर्ष तेजी से प्रकाशित किया गया जिसतें कई प्रकाशन प्रिंटसे पहले उपलब्ध थे जिन्हे प्रेस में प्रीप्रिट या लेख के रुप में संदर्भित किया गया थ इय समीक्ष में

प्रत्संग (कोरोना)

अज्ञात कारण के निमोनिया के साथ मामलो के उदघटन क्लस्टर के रूप में एक थोक पशु और मछली बजार से जुड़ा हुआ था, जिसमें मुर्गियो तीतरो चमगादड़ो भर्मोटस, विषैले त्यापो, चित्तीदार हिरण और खरगोशो जो अंगो और अन्य जंगली जानवरो यानी बस्मेट के एक हजार स्टाल थें। तात्कालिक परिकल्पना यह थी कि यह एक पशु स्त्रोत (एक जूनोलिस) से आया हुआ नावेल कोरोनावायरस था।

कोरोनावायरस मुख्य रूप से जानवरो के बीच घूमते है, लेकिन विकसित होकर मनुषयों को संक्रमित करने के लिए जाना जाता हैं जैसा कि SARS; MERS मे देख गया है और मनुषयों में पाय जाने वाले अन्य कोरोनावायरस के साथ देख गया हैं जो जुखाम की तरह हल्के खलन संबंधीत लक्षण पैदा करते है सभी छह मानव से मानव में फैल सकते है। 2002 में घोड़े की नाल चमगादड़ में संक्रमण पशु बजारो से civets के माध्यम से मुख्य भुमि चीन मे SARS का प्रकोप शुरू हुआ।

प्रभवित क्षेत्र

चीनी नव वर्ष के प्रवास के दौरान यह वायरस जनवरी के प्रांरभ और मध्य जनवरी 2020 में अन्य चीनी प्रातो में फैल गया। अंतरष्ट्रिय यात्रियो द्वारा अन्य देशो में मामलो का पता लगाना शुरू हुआ आमतौर पर प्रमुख व्यापार भागीदार देशो में थईलैड (13 जनवरी) जापान (15 जनवरी) दक्षिण कोरीया (20 जनवरी) 1 फरवरी तक दुनिया भर में 14.000 से अधिक मामलो कि पुष्टि हुई हैं, चीन में 98% पाया गया हैं 1 फरवरी को फिलीपीस में होने वाली चीन के बाहर पहली मौत के साथ 362 मौतो के लिए इस वायरस को जिम्मेदार ठहराया गया हैं। अनुमानित माडल का सुझाव हैं कि वास्तविक आंकड़ा निदान और संचारित मामलों की तुलना में कई गुना अधिक हैं वियतनाम जपान, जर्मनी, और संयुक्त राज्य अमेरिका विशेष रूप से शिकागो में स्थानीय मानव से मानव संचरण की पुष्टि का गई हैं। लेकिन अभि तक चीन के बाहर संचरण के किसी भी संक्रियं केंद्र की पुष्टि नहि हो पायी हैं।

संकेत और लक्षण

पीडित व्यकित के कोइ त्यंकेत और लक्षण नही भी हो त्पकते है हालाकि लक्षण प्रकर करने वाले लोगो में बुखर टवासी सांस की तकलीफ और दरूत हो सकते है और तातूली प्रे बहुत गंभीर हो सकते है3फरवारी 2019 तक गंभीर माामली की त्यटया17.393 में प्रे 2.298 है जिसमे 488 स्वरूथ हुए है गंथीर त्यक्रमाण के माामलो के परिणमस्वरुप निमोनिया गुर्दे की विफलता और मृत्यु हो त्यकती है ऊपरी श्वसन लक्षण जैसे कि छीकना बहती नाकदया गये मे टवराश अक्सर कम होते है लक्षण की शुरुआत त्ये लेकर विश्व टवास्घय संगठ व्दारा 2से 10 दिन और 45 त्पटट फार डिसीर कटोल एड प्रिवेशन व्झारा 2ो 14 दिनो का अनुमाद लगाया गया है वुहान के अस्पताले में भर्ती कराए गए पहले 41 पुष्ट भमलो मे से 13.32 व्यक्टियो में एक और पुरानी बीमीटी धी जैसे मधुमेह था उच्च रक्तचाप

कारण

कोरोना वायरस मुख्य रूप से हवा की बूदो के माध्यम से फैलता हैं जब एक संक्रमित व्यक्रमित व्यक्ति खाली या लगभग उफीट से 6 फिट की सरत्रीमा के भितर छीकता है।वायरल आर एन ए पहले पुष्ट मामले में से एकत्र माल नमुनो में भी मिला था हालाकि यह स्पष्ट नहि हैं कि क्या सक्रामक वायरस का विफल – मौखिक संचरण भी होता है। यह अन्य करोना वायरस (विषाणु)की तरह हैडल और रेलिंग के माध्यम से भी फैल सकता हैं। सुपर स्प्रेडर से मेडिकल स्टॉफ के 14 अलग – अलग सदस्यो के व्यंक्रमित होने की सुचना मिली थी। 25 जनवरी 2020 का सिन्हुआ समाचार एजेसी को की गई धोषण में चीनी सेटर फार डिसीज कंट्रोल एंड प्रिवेशन के प्रमुख गाओ फु ने इस बात से इनकार किया कि उक्त व्यक्ति को सुपर स्प्रेडर माना जाना चाहिए।

मूल व्रजनन संख्या

लोगो के बीच वायरस के प्रसार परिवर्तन शील रहा है कुछ प्रभाति लोगो वायरस को दूसरो तक नही पहुचाया जबकि अन्य मे त्यक्रमण को फैलाया है 2.13 से 3.11 तक मूल प्रजनन संख्या क लिए

कई अनुमान लगाए गए है संख्या बताती है कि एक नव सक्रमित त्यक्ति कितने लाकगो के वायरस से संक्रमित करने की मंभावना टरवता है नए कोरोनावायरस कथित तौर पर अब तक चार लोगो की त्रृखला का संक्रमित करने में सक्षमह" यह गंभीर तीव्र श्वसन सिड्रोम सें त्यबैधित कोरोवायरस के समान है 2019 ncov के प्राकृतिक वन्यजीव रिजवयिर पष्टि नही की गई है जिसको हसेते 2019 ncovमनुष्यो तक पहुचते है

41

भारत में कोरोना के खिलॉफ सोशल मिडिया

सोशल मिडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवहार परिवर्तन और covid-19 के खिलाफ सार्वजनिक सुरक्षा के बारे मैं जागरूकता को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता हैं स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने के लिए उपयोगी उपकरण के रूप में सोशल मिडिया प्लेटफॉर्मेा उपयोगी कर सकते हैं स्वास्थ ज्ञान का बेहतर बनाने और क्रॉस– सांस्कृतिक संदर्भ में स्वास्थ व्यवहार को अपनाने के लिए सोशल मीडिया से कोरोना महामारी रोग से कैसे बचे की जानकारी रहति है जिस के अनुसरण कर हम अपने और अपने आप को सुरक्षित रख सकते है संक्रमित होने पर उस के ईलाज अस्मपताल कि जानकारी अस्पताल में ब्रेड की जानकारी डॉकटरो दवाईयो फैलाव को रोकने के उपाय पर पूर्ण जानकारी उपलब्ध रहति हैं जिसे हम कोरोना कि जंग जीत सकते हैं।

सोशल मिडिया में प्रमुख रूप से सुचनाओं का आदान प्रदान करती हैं जो की पल –पल की खबर रखता है।कोरोना के खिलाफ सोशल मिडिया एक वरदान के रूप से उभर कर सामने आया हैं। जो कि एक मानव को अद्वभुद देन हैं इस के बल पर ही भारत ही नहि वरना पुरा विश्व एक जुट होकर मानव समाज की सक्ष में अहम रोल निभया हैं। लाकडाउन के दोरान सोशल मिडिया ही व्यक्तियों का एक मात्र बहुत तेजी से जानकारी लेने व देने का काम व बिमारी तेजी से जानकारी लेनेव देने का काम किया व बितारी को कम करने में सबसे गडी भुमिका निभाई जो की अपने आप में रोचक, अदभुद व सरल ज्ञानवर्धन अनुभव रहा।

भारत में कोरोना से सामाजिक स्थिति

कोरोना वायरस (कोविड–19) महामारी के वैश्विक प्रसार के साथ – साथ हर समाज की विसंबतिया भिसामने आ रही हैं, चाहे वह विकस्ति समाज हो या विकासशील समाज विश्वस्तर पर संमित लोगो की ंख्या 11,56,000 (1.5 मिलयन) लगभग होगी और मृत्यु का आंकडा प्रतिदिन बढ रहा हैं जो अब तक लाखेद में है कोरेनो वायरस हमें एसी चीजे बता रहा हैं जिन्हे हम आम तौर पर स्वीकार नही करना चाहते।यह हमे समृहद देशो मे मौजुद असमानताओ को पहचानाने के लिए भी बाध्य कर रहा हैं। कोरोना से आबादि का गरिब तबका मसलन, ड्राईवर घरेलु नौकरानियॉ प्रवासी मजदुर और अन्य लोग को सारी नुकशान हुआ क्यो कि वे इतने शिक्षीत नही हैं कि नए कोरोना वायरस की जॉच करवाऐ व आवश्यक चिकित्सा का लाभ ले। सुविधावओ तक उन की पहुॅचना तो कठिन और असंभव हैं। सरकारी अस्पतालो मे न तो पर्याप्त आई सी यू हैं और न वेटिलेटर इस लिए गरीब लोगा इस से ज्यादा प्रभावित रहे। बार– बार साबुन लगा कर धोना, मास्क लगाना, उचित दुरी बना कर रखना, जरूरत हो तो ही बाहर निकलना जाना। कोविड 19 ने समाज में सभी की जिदगी मे उथल– पुथल मचा दि हैं। लाकडाउन स्कुल बंद होना और भौतिक दूरी से कई लोगो के उपर नकरात्मक प्रभाव आने लगे। जिसे सकरात्मक सोच से हटाया जा सका। इस महामारी में कई लोगो की नौकरी व्यवसाय छिन गया, कई लोगो की असमय मुत्यु हो गई जो कि कोरोनाकाल की सबसे भयानक सचाई रहि जो की समाज एक बिखरा अलग अलग लग रहा था जिसे पिरोने में अभी समय लग रहा हैं। एंव स्थित अब सामान्य की ओर बढ रहि हैं जिन्दगी पटरी पर लौट रहि हैं ।

भारत में कोरोना से समाज की आथिर्क स्थिति

स्युन्तन राष्ट्र की कौन्फेस बौन ट्रेड एंड डेवेलपयेंट unctadने खबर दी है कि करोना वायरष से प्रभावित दुनिया की 15 सबसे बडी अर्थव्यवस्थओ में से एक भारत भी है चीन में उत्पादन मे आई कमी का अअसर भारत से त्सापाष पर भी पडा है और इससे भारत की अर्थत्यवस्थाको`रीब 34.8 करोड डेंलर तक का नुकसान उठाना पड सकता है यूरोत के आर्यित सहयोग और विकास संगंठन यानी ओईयीडी ने भी 2020 .21 में भारत की अर्थव्यवस्था के विकास की गति का पूर्वा ?नुमान 1.1 प्रतिशत घटा दिया है औईसीडी ने तहले अनुमान लगाया था कि भारत की आर्थव्यवस्थ की विकास दर6.2 प्रतिशत रहेबी लेकिन अब उसने इसे कम करक 5.1 प्रतिशत कर दिया है हभी दुनिया की सबसे तेज गति से बढते वाली अर्थव्यवस्या की विकास दर बीते साल 4.7 फीसदी रही यह छह सालो ने विकाय दर का सबसे निचला स्तर था साल 2019 में थारत में बेरोजगारी 45 साल के अंत में देश के आठ प्रमुख क्षेत्रों से औधोगिक उत्पादन 5.2फहसदी तक गित गया यह बीते 14 वर्षो मे सबसे खराब स्थिति थींकम शब्दो मे कहें तो भारत की आर्थि स्थिति पहले से ही खराब हालत में थी विशेषज्ञों का मानना है कि अब वायरस के प्रभाव की वजह से जहां एक और लोगों के स्वास्थ्य पर संकर छाया है तो दूसरी ओर पहले से कमजोर अर्थव्यवस्था का और बडा झटका मिल सकता है

भारत तें कोरोना से चुनौतियाँ

भारत में कोरोना से जिस प्रकार सवंमित लोंगो की संख्या बढती जा रही है उसे देखते हुए पुनःलौकडाउन रारी रखने का विचार हो सकता है या तीसरी लहर की आहत से यह हो भारत के पधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोउी ने भारत की जनता करे सम्बोधीत करते हुए बात रही थी कि जान भी पर ह की धोषण की लॉकअउन से उत्पादन लगभग ठप रहा कृषि कार्य मे बाधा आरही है आर्थि गतिविधियाँ शून्य से प्रामभ रे रीि है रो लॉकडाऊन मे भूखमरो के करीब पहुच गई सही क्यो की लोगो के पास उन की नौकरी दुकान व्यवसाय सब रुप पड गया था विशेष तोरे से यह गरीब तब को मजदूरोपर हाबी हो गया था कोरोना वायरस ने भारत ही नही बलिक दुनिया के हर कोने की हर कोने की अर्थव्यस्था को खराब कर दिया हैं। विश्व बैक की ताजा रिर्पोट में कोरोना के कारण भारत की आर्थिक वृद्वि दर मे भारी गिरावट आई हैं। भारत का बढ़ता राजकोषीय घाटा जो की स्वाथविक हैं इंस परीस्थित मे। अस्थायी बेराजगारी, स्थायी प्रभाव पर्यटक क्षेत्र की समस्या आने वाले पर्यटल की संख्या अभी कम रहति हैं जिस से इस क्षेत्र मे लाखों का नुकशान हो रहा हैं अंतरराष्ट्रीय बजार पर भी इस का प्रभाव पड़ा हैं सूक्ष्म, लधु, मध्यम, उद्योग पहले हो आर्थिक स्थिती कमजोर हो लॉकडाउन से उन की कमर तोड दी हैं जिसे पटटरी पर आने में अभी समय लगेगा और स्थिती में सुधार के लिए समय लगेगा। हमे आगे की स्थिति से निपटने के लिए अभि से कमर कस लेनी चाहिए।

45

भारत में कोरोना से प्राकृतिक पर प्रभाव

मनुष्य इस पृथ्वी पर रहने वाला एक मात्र ऐसा जिव है जो की पृथ्वी के जापमान संसाधनों का बेतर तीब तरीको से दोहन हरता हैं एक वत्ता ऐसा था जब इस पृथ्वी पर इंसान तो थो लेकिन वे एकदम सिमित संख्या और स्थान पर निवास करते थे जिसके कारण पृथ्वी का समन्वय बना हुआ था परन्तु समय के साथ खेति कि खोज हुई और मनुष्यों पे एक हि स्थान पर रहेना शुरू का दिया और उद्योग आदि की स्थापना की विभिन्न धातुओं के खोज के साथ ही मनुष्य कि महत्वकांता बढ़ती चली गई ओर मनुष्यों ने पृथ्वी दोहन शुरू किया इसी दोरान ही मौसम के कई परीवर्तन आये जिसने हजारो बीमारियों को जन्म दिया इन्ही बीमीरीयो ने महामारी का रूप लिया उद्योयोगीकरण से वैश्रीकरण ने खाघ से लेकर जल तक का अशुदकर दिया जिसने बीमीरियों को निमंत्रण देने का कार्य किया। करोना वायरस में हुए लॉकडाउन के प्रभाव से लोगों का जहां आर्यक रूपो का समान करना पड़ रहा हैं वही प्रकृति पर उसका प्रभाव अच्छा पड़ा है जिससें हमारी प्राकृति स्वच्छ हो गई हैं कारखाने बंद होने से प्रदुषण का कम होना प्राक्रित को स्वचछ होति जा रहि हैं जिससे हमारी प्रकृति स्वच्छ होती जा रहि हैं ओर पेड़ पौधे भी विशान रूप लेता जा रह हैं आज भारत में कोरोना से प्रकिृतिक पर अच्छा प्रभाव पड़ा हैं।

उददेश्य

इस अध्ययन का उददेश्य कोरोना महामारी के खिलाफ सोशल मिडिया का प्रभाव बताना व सार्वजनिक स्वास्थ व्यवहार परीर्वतन के माध्यम से Covid-19 महामारी के खिलाफ सोशल मिडिया प्लेटफार्म का प्रभाव की जाचं करना रहा व भारत करोना कि स्थिती क्या रहि।

मरिके

प्रश्नावली के माध्यम से मात्रात्मक दुष्टिकोण और कई सोशल मिडिया प्लेटफार्म का उपयोग किया बया था। इसमे विभिन्न बिन्दुओ विश्लेषण और सत्यापन करने के लिए सेरचनात्मक समिकरण मॉडलिग का उपयोग किया व विश्व भारत की स्थिति कोराना काल में कैसी रहि उन का विश्लेष्णो पर रहा।

परिणम

मुख्य निषकर्षों से पता चला की सोशल मिडिया प्लेटफार्म के उपयोग से कोरोना महामरी से सुरक्षीत रखने व उस के ईलाज पर सकारात्मक प्रभाव पडा हैं। इस लिए Covid-19 के खिलाफ सार्वजनिक स्वास्थय सुरक्षा पर सोशल मिडिया प्लेटफार्म के प्रभावो की बेहतर समझ रहि जो की अच्छे सकारात्मक परिणाम सामने आए जो कि सोशल मिडिया एक जरूरी सेवाओं में से एक हाकर उभरा है जो की इस के बिना जीवन अधुरा व अपुर्ण सा होगा।

निष्कर्ष

यह निष्कर्ष बताते है कि सोशल मिडिया प्लेटफार्म का उपयोग कर सार्वजनिक सुरक्षा स्वास्थ्य व्यवहार परिवर्तन और Covid-19 के खिलॉफ सार्वजनिक सुरक्षा के बारे में जागरूकता को सकरात्मक रूप से प्राभावित करता हैं। यह लक्षित आबाढी बढ़ाने के लिए एक प्रभावी उपकरण के रूप में सोशल मिडिया प्लेटफार्म का उपयोग कर सकते हैं करोना संक्रमण के तेजी से फैलते प्रसार को राकेकने म सोशल मिडिया प्लेटफार्म युटुब, टुयुटर , इस्टाग्राम आदि का विषेश सोमदाक रहा जो कई जानकरीयॉ साझा कर एक दुसरे कि मदद में संतु का काम किया इस करोना कि लड़ाई मे यह एक मिसाईल का रोल किया और कार रहा हैं।

सुझाव

सोशल मिडिया प्लेटफार्म एक वरदान हैं जों मानव को तेज गति से विकसीत करने ते अहमद हैं परन्तु इस का उपयोग सोच समझकर करना चाहिए क्यो कि इस में कोई भ्रमक झुठा या ठगी का शिकार हो सकता हैं जिस से आर्थिक, सामाजिक, मानसिक हानी हो सकता है। जिस से उपयोगकर्ता के उपर इसका बहरा प्रभाव पड़ सकता हैं और थोड़ी सी समझदरी मे यह आप का बहूत आगे ले जा सकता हैं औंर करोना या अन्य बिमारीयों से बचाव के तरिको व इस सें ससंबधीत सभी जानकारी उपलब्ध करता हैं जिस का आप सावधनी पुर्वक उपयोग कर अपने आप और अपने परिवार को बचा सकते हैं। व मनोरजंन के साधन के रूप मे इसका उपयोग कर सकते हैं।

अध्याय

के रूप मे कोरोना महामारी का भारत में आर्थिक सामाजिक प्राक्रित व चुनौतियो को लिया गया शेध के अंत में निष्कर्ष सुझाव परिशिष्ट को रखकर शोध कार्य को पुण किया गया।